eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

हिन्द स्वराज'' एवं ''देश की बात'' का पुनर्पाठ

[1]डॉ0 राजेश चन्द्र मिश्र

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य, हीरालाल रामनिवास स्ना0 महाविद्यालय, खलीलाबाद, संत कबीर नगर

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

हिन्द स्वराज (1909) गुजाराती भाषा में लिखी गई महात्मा गांधी की पुस्तक है। इसी दशक में बांग्ला भाषा में प्रकाशित एक अन्य प्रसिद्ध पुस्तक है सखाराम गणेश देउसस्कर की 'देशेर कथा' (1904) (हिन्दी अनुवाद– 'देश की बात')। यह दिलचस्प है कि दोनों पुस्तकों को एक ही वर्ष सन् 1910 में ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था।

शब्द संक्षेप- गाँधी, एक नेता, एक उपदेशक, एक शिक्षक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।

Introduction

बीसवीं शदी के प्रारम्भ में 'गांधी' और 'देउस्कर' की पुस्तकों में देश–चिंता और सभ्यता–समीक्षा के जो सन्दर्भ आये हैं उनकी आज के सन्दर्भ में क्या कोई प्रासंगिकता हो सकती है ? क्या आधुनिक सभ्यता और औपनिवेशिक व्यवस्था के सन्दर्भ में आये ये विचार हमारे समाज के मानस को समझने का कोई विवेक भी देते हैं ? इन दो बड़े प्रश्नों के साथ इन दोनों पुस्तकों का एक पुनर्पाठ इस शोध–आलेख के केन्द्र में है।

हिन्द स्वराज

हिन्द स्वराज (1909) में प्रस्ताव के अतिरिक्त बीस अध्याय हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. कांग्रेस और उसके कर्ता–धर्ता, (2) बंग–भंग, (3) अशांति और असन्तोष,

(4) स्वराज्य क्या है ? (5) इंग्लैण्ड की हालत, (6) सभ्यता का दर्शन, (7) हिन्दुस्तान कैसे गया ? (8–12) हिन्दुस्तान की दशा– 1,2, 3, 4, 5, (13) सच्ची सभ्यता कौन सी ? (14) हिन्दुस्तान कैसे आजाद हो ? (15) इटली और हिन्दुस्तान,

(16) गोला–बारूद, (17) सत्याग्रह–आत्मबल, (18) शिक्षा, (19) मशीने,

(20) छुटकारा।

हिन्द स्वराज में क्या है ? उसका सार क्या है? गांधी के शब्दों में ही, ''आपको विदा करने से पहले फिर एक बात मैं दोहराने की इजाजत चाहता हूँ कि–

1. अपने मन का राज्य स्वराज्य है।
2. उसकी कुन्जी सत्याग्रह, आत्मबल या करुणा–बल है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

3. उस बल को आजमाने के लिए स्वदेशी को पूरी तरह आजमाने की जरूरत है।

4. हम जो करना चाहते हैं वह अंग्रेजों के लिए (हमारे मन में) द्वेष है इसलिए या उन्हें सजा देने के लिए नहीं करें, बल्कि इसलिए करें कि ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। मतलब यह कि अंग्रेज अगर नमक–महसूल रद्द कर दें, लिया हुआ धन वापस कर दें, सब हिन्दुस्तानियों को बड़े–बड़े ओहदे दे दें और अंग्रेजी लश्कर हटा लों, तो हम उनकी मिलों का कपड़ा पहनेंगे या अंग्रेजी भाषा काम में लायेंगे या उनकी हुनर कला का उपयोग करेंगे, सो बात नहीं है। हमें वह समझना चाहिए कि वह सब दरअसल नहीं करने जैसा है, इसलिए हम उसे नहीं करेंगे।

मैंने जो कुछ कहा है, वह अंग्रेजों के लिए द्वेष होने के कारण नहीं, बल्कि उनकी सभ्यता के लिए द्वेष होने के कारण कहा है।

मुझे लगता है कि हमने स्वराज्य का नाम तो लिया, लेकिन उसका स्वरूप हम नहीं समझे हैं। मैंने उसे जैसे समझा है, वैसा यहाँ बताने की कोशिश की है।

मेरा मन गवाही देता है कि ऐसा स्वराज्य पाने के लिए मेरा यह शरीर समर्पित है।''

इस प्रकार गांधी जी ने 'हिन्द स्वराज' के अन्त में ये चार मुद्दे ही गिनाये हैं– स्वराज, सत्याग्रह, स्वदेशी तथा सर्वोदय। गांधी जी का स्वराज का स्वरूप अंग्रेजों की दासता से मुक्ति तक ही सीमित नहीं थी, वरन् उसका विस्तार राजनीतिक स्वतन्त्रता, आर्थिक स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक दासता से मुक्ति के साथ आत्मानुशासन तक है। गांधी चिन्तन में मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आयामों के साथ एक आध्यात्मिक उपाय भी है।

गांधी के सम्पूर्ण जीवन का निचोड़ जिस एक शब्द में व्यक्त हुआ है, वह शब्द है 'सत्य' या 'सत्याग्रह'। 'सत्य' का आग्रही तो 'संघर्ष' करेगा ही, पर 'संघर्ष' का आग्रही सदा 'सत्य' का ही आग्रह करेगा, यह नहीं कहा जा सकता। गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह एक अमूल्य साधन है, जो मनुष्य मनुष्यत्व को समझता है, जिसको खुदा का डर है, वह दूसरे से डरगा नहीं। उसे अन्य के बनाये हुए कायदे बाँधते नहीं। अगर लोग एक बात सीख लें कि अन्यायी लगने वाले कायदों को स्वीकार करना नामर्दानगी है तो फिर हमें किसी का जुल्म बंधन में नहीं डाल सकता। फिर आप चाहें तो हमें काट डालें, मर्जी में आये तो तोप से उड़ा दें, परन्तु हमें जो पसन्द नहीं है, वे आप करेंगे तो उसमें हम आपकी मदद नहीं करेंगे और हमारी मदद के बिना आपसे एक कदम रखा नहीं जायेगा। स्वराज की यही पूँजी है। गांधी ने आर्थिक स्वतन्त्रता और स्वदेशी का अनिवार्य सम्बन्ध माना है। स्वदेशी शब्द का अर्थ मात्र घरेलू वस्तुओं का उत्पादन और प्रयोग नहीं है। स्वदेशी उन्हीं वस्तुओं का उपयोग है जो जीवन धारण के लिए आवश्यक और जिनके उत्पादन में मनुष्य का श्रम लगा है। ऐसा श्रम जो बाध्यकारी नहीं है और इसी नाते मुनाफाखोरी का साधन भी नहीं है। स्वदेशी आत्मनिर्भरता का दर्शन है, जिसके अभाव में आर्थिक स्वतन्त्रता की परिकल्पना गांधी जी ने नहीं की थी। गांधी जी ने 'सर्वोदय' के तीन सूत्र दिये हैं– 1. सबकी भलाई में हमारी भलाई निहित है। 2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए, क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है। 3. सादा मेहनत–मजदूरी का, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

'देश की बात'– 'देश की बात' बांग्ला में लिखी सखाराम गणेश देउस्कर की पुस्तक 'देशेर कथा' का हिन्दी अनुवाद है। इसके हिन्दी अनुवादक हैं प्रसिद्ध पत्रकार बाबू राव विष्णु पराड़कर। 'देशेर कथा' का प्रथम प्रकाशन सन् 1904 में हुआ था। देशेर कथा के लेखक सखाराम गणेश देउस्कर का जन्म 17/12/1869 को देवघर के पास करौं नामक गाँव में हुआ था, जो अब झारखण्ड राज्य में है। वे मूलतः मराठी थे। 18वीं सदी में मराठा शक्ति के विस्तार के समय उनके पूर्वज महाराष्ट्र के देउस गाँव से आकर करौं में बस गये थे। देउस्कर भारतीय नवजागरण के एक निर्भीक पत्रकार और मौलिक विचारक थे। उनके सम्पूर्ण चिन्तन और लेखन की बुनियादी चिन्तन देश की पूर्ण स्वाधीनता थी। श्री अरविन्द ने लिखा है कि स्वराज शब्द का पहला प्रयोग 'देशेर कथा' के लेखक सखाराम गणेश देउस्कर ने किया। देउस्कर के प्रमुख ग्रन्थ हैं– महामति रानाडे (1901), शिवाजीर शिक्षा (1904), शिवाजी (1906), कृषकेर सर्वनाश (1904), तिनकेर मोकद्दमा और संक्षिप्त जीवन चरित (1908) आदि। इन पुस्तकों के साथ–साथ इतिहास, धर्म, संस्कृति और मराठी साहित्य से सम्बधित उनके लेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इनके लेखों का उद्देश्य भारतीय जनता को अपने अतीत और वर्तमान का ज्ञान कराना था।

देउस्कर भारतीय जनजागरण के ऐसे विचारक हैं, जिनके चिन्तन और लेखन में स्थानीयता और अखिल भारतीयता का उद्भुत संगम है। वे महाराष्ट्र और बंगाल के नवजागरण के बीच सेतु के समान हैं, उनका प्रेरणा–स्रोत महाराष्ट्र है, पर वे लिखते हैं बांग्ला में। अपने मूल से अटूट लगाव और वर्तमान से गहरे जुड़ाव का संकेत उनके देउस्कर नाम में दिखाई देता है जो देउस (महाराष्ट्र) और करौं (देवघर, झारखण्ड) के योग से बना है। 'देशेर कथा' की अपूर्व लोकप्रियता का अंदाज सन् 1904 में पहला संस्करण एक हजार प्रतियों का छपा। सन् 1905 में दो हजार प्रतियों का दूसरा संस्करण निकला। सन् 1905 में ही पाँच हजार प्रतियों का तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। 1907 में दो हजार एवं 1908 में तीन हजार प्रतियाँ क्रमशः चौथे एवं पाँचवें संस्करण के रूप में छपे। महज पाँच वर्षों में पाँच संस्करण और तेरह हजार प्रतियाँ छपीं। उल्लेखनीय यह है कि लेखक प्रत्येक संस्करण में कुछ नई सामग्री जोड़ता था, जिससे पुस्तक का आकार बढ़ जाता था, किन्तु उसकी कीमत नहीं बढ़ाई जाती थी, बल्कि दो बार घटा दी गयी।

'देशेर कथा' के लिखे जाने की पृष्ठभूमि की ओर संकेत करते हुए माधव प्रसाद मिश्र ने 1908 में लिखा है कि ''जिस समय यह पुस्तक बांग्ला में लिखी गई थी, उस समय बंगाल के टुकड़े नहीं हुए थे, स्वदेशी आन्दोलन का विचार भी लोगों के जी में नहीं आया था। लार्ड कर्जन के कुचक्रपूर्ण शासन से लोग कुपित हो चुके थे, पर उनकी मोहमयी निद्रा तब तक भी टूटने नहीं पायी थी। ..... यह किसी को ध्यान भी न था कि उनके देश की कैसी शोच्य दशा हो रही है और आगे कैसा परिवर्तन होने वाला है।'' ऐसे समय में देशेर कथा का लिखा जाना एक वैचारिक विस्फोट की तरह था, जिसने जन–मानस को धक्का देकर चकित करते हुए जगाया। 23–11–1912 को (43 वर्ष) यह प्रकाश–पुंज सदा के लिए बुझ गया। दुनिया की अधिकांश महान प्रतिभायें अपने आलोक से लोक को चकित करती हुई इस तरह अल्पायु में ही दुनिया से विदा हो गयी है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

देउस्कर के पहले दादा भाई नौरोजी, रमेश चन्द्र दत्त और विलियम डिग्वी ने भी अंग्रेजी राज द्वारा भारत के शोषण की प्रक्रिया का विवेचन किया था। देउस्कर ने देशेर कथा में इन तीनों की पुस्तकों की मदद ली है। 'देशेर कथा' की दो बातें इन तीनों के पुस्तकों से भिन्न एक विशिष्टता बनाती हैं। प्रथम कि इन तीनों की पुस्तक अंग्रेजी में है, जबकि देशेर कथा सरल भाषा 'बांग्ला' में और दूसरी कि देशेर कथा का लक्ष्य आम जनता में स्वदेशी की भावना जगाना और स्वाधीनता की चेतना पैदा करना था।

'देश की बात' अनुवादक बाबूराव विष्णु पराड़कर की पुस्तक हिन्दी में सन् 1910 में कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी। 'देशेर कथा' के चौथे संस्करण से देउस्कर जी ने बाबूराव विष्णु पराड़कर से इनका हिन्दी अनुवाद करने की आज्ञा दी। बांग्ला 'देशेर कथा' के चौथे संस्करण से सन् 1910 में प्रकाशित 'देश की बात' का तुलनात्मक अध्ययन करने पर देउस्कर जी के ज्ञान की व्यापकता और उनके अखिल भारतीय दृष्टिकोण का बोध होता है। 'देश की बात' (1910) की पुस्तक में देउस्कर की प्रस्तावना के अतिरिक्त निम्न अध्याय हैं : 1. हमारा देश, 2. अंग्रेजी शासन के गुण–दोष, 3. देश की अवस्था, 4. मानसिक अवनति (थ्याकरे की सर्व–घातिनी नीति, उच्च पद पर भारतवासी, अंग्रेजों की संगत के गुण–दोष, बंग–भंग का नैतिक कुफल, मानसिक अवनति के अन्यान्य कारण, जातीय निन्दा), 5. किसानों का सर्वनाश (काशी, अवध, स्थायी बन्दो बस्त, बंगाल में रोड–केस, दुर्भिक्ष निवारक कोश, मि0 थारवर्ण का मन्तव्य, सरकारी रिपोर्ट का रहस्य)। इसलिए इन प्रश्नों का उत्तर कि बींसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गांधी और देउस्कर की पुस्तकों में देश–चिन्तन और सभ्यता समीक्षा के जो सन्दर्भ आये हैं, उनकी आज के सन्दर्भ में क्या कोई प्रासंगिकता हो सकती है ? क्या ये विचार हमारे समाज के मानस को समझने का कोई विवेक भी देते हैं?

ये विचार वैसे के वैसे, उसी स्वरूप में आज समायोजित और व्यावहारिक कैसे हो गये ? इस बारे में हमें विचार करना पड़ेगा– किसी भी विचारधारा के तत्व और तन्त्र का विवेक कैसा है। यह सिर्फ गांधी और देउस्कर के विचारों पर नहीं, किसी भी चिन्तक के विचार पर लागू की जा सकती है। इन चिन्तकों के विचारों में से कुछ ऐसे होते हैं जो कि उस समय के देशकाल की परिस्थिति में से पैदा हुए होते हैं। उदाहरण के तौर पर लेखक जब गुलाम देश का वाशिंदा हो, तब उसके प्रकट किये हुए विचार गुलामी दूर होने के बाद कदाचित् कालवाह्य लगे। उसके विचारों में से कुछ स्वतन्त्र देश में भी प्रासंगिक लगे। कुछ विचार स्थलकाल की परिस्थितियों में से पैदा हुए होते हैं और अन्य कुछ ऐसे विचार होते हैं जो स्थल काल की मर्यादा से ऊपर उठकर देश काल से अबाधित रहते हैं। इनमें से प्रथम प्रकार उस विचार का तन्त्र सूचित करता है और दूसरा प्रकार उसका तत्व प्रकट करता है, इसलिए गांधी और देउस्कर के विचारों के बारे में भी ऐसा तन्त्र–तत्व विवेक करना जरूरी है। सत्य, अहिंसा, सादगी, विकेन्द्रीकरण, स्वदेशी आदि विचार तत्व में गिना सकते हैं। वे किसी भी स्थल में तथा किसी भी काल में लागू हो सकते हैं, परन्तु तन्त्र पर समय एवं स्थल के अनुसार परिवर्तन हो सकते हैं।

6. रेल और नहर (वाणिज्य विस्तार से हानि, नहर से लाभ, मिस्र देश की जल–प्रणाली, नाव बनाने की कारीगरी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

7. कारीगरों का सर्वनाश।

8. देशी कारीगरों का नाश।

9. स्वदेशी आन्दोलन।

10. आय और व्यय (सरकारी, सार्वजनिक ऋण), भारतीय राजस्व का वर्णन, कृषि–विभाग में सरकारी खर्च, होम चार्ज, सेना–विभाग का अपव्यय, श्वेतांग पोषण)।

11. पादरियों की युक्ति (मि0 डोनल्ड स्मीटन की सारगर्भ उक्ति)।

12. प्रतिकार का उपाय (स्वराज्य प्रतिष्ठा)।

13. सम्मोहन : चित्त–विजय।

14. बट्टे से हानि।

15. बंग–विभाग (सरकारी सिद्धान्त, 4.5 करोड़ बंगालियों की प्रार्थना निष्फल हुई। भाई–भाई, ठांई–ठांई, विभाग का परिणाम, राजपुरुषों की कुटिलता, मुसलमानों की हानि, प्रजा का प्रतिवाद, बंगालियों का कर्तव्य, स्वदेशी का फल, हिन्दू और मुसलमान)।

16. परिशिष्ट (सन् 1901 की आदम सुमारी भारत के कारीगर, भारत में दरिद्रता, श्वेतांग–चरित्र, देशी नरेश, स्वतन्त्र हिन्दूराज का नेपाल, रेसिडेंटो का व्यवहार, ब्रिटिश भारत में आने वाले विदेशी माल की तालिका)।

'देश की बात' (1910) चौथा संस्करण हिन्दी में 1909 तक की पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्टस, पुस्तकों आदि से सामग्री का संकलन है। इससे देउस्कर जी की तैयारी और तत्परता का अंदाज लगाया जा सकता है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद की लूट और बर्बरता के सबसे अधिक शिकार भारत के किसान हुए हैं। देउस्कर ने सम्पूर्ण भारत के किसानों की तबाही का तथ्यात्मक और ब्यौरेवार विश्लेषण किया है। भारतीय किसानों की दुर्दशा के बारे में देउस्कर की समझ और चिन्ता आज भी हमारे लिए उपयोगी है। 'कारीगरों का सर्वनाश' और 'देशी कारीगरों का नाश' में देउस्कर ने अंग्रेजी राज द्वारा उनके ऊपर किये गये तरह–तरह के अत्याचार और लूट वाली व्यापार नीति लागू करते हुए भारतीय कारीगरों के कारीगरी और वाणिज्य को तबाह कैसे किया, इसका चित्रण किया है। देउस्कर ने आय और व्यय नामक अध्याय में अंग्रेजी राज द्वारा भारत की लूट का पूरा ब्यौरा दिया है और साथ ही प्रमाण के रूप में गवर्नर जनरल सर जान शोर का यह कथन भी उद्धृत किया है– ''शांति और प्रसन्नता के दिन भारत से चले गये हैं। भारत में एक समय जो बेशुमार दौलत थी, अब वह सब विलायत चली गयी है।''

सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजी राज के विरूद्ध हिन्दुओं और मुसलमानों में जो एकता कायम हुई थी, उससे अंग्रेजी राज डरता था और उसे तोड़ना चाहता था। देउस्कर इस उपनिवेशवादी चाल को समझ रहे थे, इसलिए 'देश की बात' में जगह–जगह पर मुस्लिम शासन से

अंग्रेजी राज की तुलना करते हुए एक ओर उपनिवेशवादी इतिहास–लेखन की भेद–नीति का खण्डन किया है तो दूसरी ओर मुसलमानी शासन का यथार्थवादी विवेचन किया है। भारत की सभ्यता, संस्कृति और साहित्य के विकास को मुस्लिम शासन के योगदान का उल्लेख देउस्कर ने किया है।

'देश की बात' का एक अध्याय है सम्मोहन : चित्त विजय, जिसमें ब्रिटिश उपनिवेशवाद द्वारा भारतीय मानस को उपनिवेश बनाने की पूरी जटिल प्रक्रिया और उसके परिणामों की बारीकियों का व्यौरेवार विश्लेषण किया गया है। यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है कि देउस्कर 19वीं सदी के अन्त में और बीसवीं सदी के आरम्भ में इस जटिल समस्या के बारे में इतने सजग हैं और उसका इतनी बारीकी से विश्लेषण करते हैं। देउस्कर जी ने व्यापार, शिल्प, कला आदि के क्षेत्रों से उदाहरण देकर यह सिद्ध किया है कि अंग्रेजों के भारत में आने से पहले यह देश कितना सभ्य था और यह भी कि भारत के सभ्य बनाने का अंग्रेजों का दावा कितना झूठा है। 'प्रतिकार का उपाय' नामक अध्याय में देउस्कर जी ने लिखा है कि स्वराज के बिना हमारी वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक बुराइयां दूर नहीं होंगी। देउस्कर जोर देकर कहते हैं कि स्वाधीनता से ही मनुष्य स्वाधीन होने के लायक बनता है। देउस्कर स्वराज्य प्राप्ति के लिए स्वदेशी आन्दोलन को आवश्यक मानते थे। इसलिए देउस्कर से स्वदेशी को स्वाधीनता संग्राम का ब्रह्मसत्र कहा था। इस प्रकार 'देश की बात' में हम देखते हैं कि यह पुस्तक पराधीनता की पीड़ा से बेचैन और स्वाधीनता की आकांक्षा से उद्दीप्त मानस की रचना है। देउस्कर की यह पुस्तक भारतीय समाज को बदलने के लिए व्याख्या की कोशिश करने वाली चिन्ता की उपज है।

'हिन्द स्वराज' एवं 'देश की बात' का पुनर्पाठ करते समय दोनों पुस्तकों में बहुत सी समानताएं हैं जो निम्न हैं–

1. दोनों ने दादा भाई नौरोजी एवं रमेश चन्द्र दत्त की पुस्तकों के माध्यम से भारत में अंग्रेजी राज के शोषण की प्रक्रिया को समझने के लिए आधार बनाया है।

2. दोनों ने भारतीय (मातृभाषा) भाषाओं (गुजराती) (महात्मा गांधी), बांग्ला (सखाराम गणेश देउस्कर) में पुस्तकों को लिखा है।

3. भारत देश की दशा के सम्बन्ध में दोनों पुस्तुकों की व्याख्या दृष्टि एक जैसी है।

4. दोनों ने स्वदेशी अपनाने पर बल दिया।

श्री अरविन्द ने अपनी पुस्तक ़ैतप ।तअपदकवए व्द जीम ीपउेमसिदक वद जीम उवजीमतए चण 30द्ध में लिखा है कि स्वराज्य शब्द का पहला प्रयोग 'देशेर कथा' में सखाराम गणेश देउस्कर ने किया है। वही महात्मा गांधी अकेले मनीषी थे जिन्होंने आधुनिक काल में स्वराज शब्द के व्यापक विस्तार को रेखांकित किया है।

सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थों की सूची :

1. हिन्द स्वराज : गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।

2. सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा) गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।

3. ग्राम–स्वराज्य : गांधी जी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद।

4. हिन्द स्वराज : एक अध्ययन (गांधी को पाने का प्रयास) लेखक : कान्ति शाह, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।

5. हिन्द स्वराज : गांधी का शब्द अवतार, गिरीराज किशोर, सस्ता सहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।

6. महात्मा गांधी सहस्त्राब्दी का महानायक, सम्पादन : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।

7. गीता माता : गाधी जी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।

8. गाँव आन्दोलन क्यों ?, जो0कॉ0 कुमारप्पा, अखिल भारतीय सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी।

9. महावीर प्रसाद द्विवेदी : 'प्रतिनिधि संकलन', प्रधान सम्पादक नामवर सिंह, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।

10. गांधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्यायें,

डॉ0 रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

11. महात्मा गांधी के विचार, आर0के0 प्रभु, यू0आर0 राव, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।

12. गांधी : समय, समाज और संस्कृति, विष्णु प्रभाकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

13. महामानव महात्मा गांधी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, भारतीय प्रकाशन मन्दिर, नई दिल्ली।

14. विनाश को निमन्त्रण : भारत की नई अर्थनीति, सम्पादन– राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

15. आधी रात को आजादी, लैटी कालिन्स एवं दॉमिनिक लैपियर, अनु प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

16. मार्क्स, गांधी और समसामयिक सन्दर्भ, गणेश मंत्री, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

17. गांधी के ग्राम स्वराज्य सिद्धान्त की प्रत्यवेक्षा, सम्पादन–रामशंकर त्रिपाठी एवं विजय शंकर चौबे, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी।

18. महात्मा गांधी का दर्शन : डॉ0 धीरेन्द्र मोहन दत्त, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना–3।

19. सभ्यता का विकल्प : गांधी–दृष्टि का पुनराविष्कार, नन्द किशोर आचार्य, बाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, राजस्थान।

20. 'देश की बात'– सखाराम गणेश देउस्कर, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

,,,,,,,